समास

Amit Kumar

- https://unacademy.com/plus/goal/GMXMZ

- Use my referral code: "AmitKumar-4115" and get extra discount.

समास

समसनं समासः

सम् असन अर्थात् साथ रखना या संक्षेपीकरण ही समास है OR पदों का संक्षिप्त हो जाना ही समास कहलाता है।

अनेकेषां पदानां एकपदीभवं समासः

अनेक पदों का मिलकर एक हो जाना या एक पद बन जाना 'समास' कहलाता है।

जैसे-राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः

गङ्गायाः समीपम् = उपगङ्गम्

समास की एक शब्द में परिभाषा-**संक्षिप्तीकरणम्/संक्षेपः**।

समास शब्द का अक्षरार्थ है समसनम् अर्थात् एक साथ या पास-पास रखना।

विभक्तिर्लुप्यते यत्र, तदर्थस्तु प्रतीयते।

पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते॥

जहाँ विभक्ति को लोप हो जाता है, पर उसका अर्थ प्रतीत होता है और जहाँ अनेक पद मिलकर एक पद के रूप में परिणत हो जाते हैं, उसे समास कहा जाता है।

समास के लिए कम से कम दो शब्दों का होना आवश्यक है-पहले शब्द को "**पूर्वपद**" और बाद वाले को '**उत्तरपद**' कहते हैं।

समास में दो पदों या शब्दों को मिलाकर बनाए गए एकपद को "**समस्त पद**" या "**सामासिक पद**" कहते हैं।

अलग-अलग करने पर, अर्थात् विभाजन करने पर "**समास-विग्रह**" या "**व्यस्त पद**" कहते हैं। •

unacademy

समास के प्रकार

- अव्ययीभाव समास
- तत्पुरुष समास
- द्वन्द्व समास
- द्विगु समास
- कर्मधारय समास
- बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

सूत्र-**'पूर्वपद प्रधानः अव्ययीभावः'** ।

परिभाषा-जब समस्त पद या सामासिक पद में पूर्व पद (पहला) अव्यय (प्रधान) होता है तथा समस्त पद नपुंसकलिग एकवचन की तरह प्रयुक्त होता है उसे अव्ययीभाव समास

कहते हैं।

यथा-प्रतिदिनम्-इसमें पूर्व पद 'प्रति' है (अव्यय)।

विग्रह करने पर अव्यय के अर्थ का प्रयोग ही करते हैं, अतः यह पद प्रधान हुआ।

यथा-'उपकृष्णम्'–कृष्णस्य समीपम् ॥

उहाँ समीप अर्थ प्रकट करने के लिए 'उप' अव्यय का प्रयोग किया गया है।

आदर्श समस्त पद

समस्त पद	समास विग्रह	
1. **उपगङ्गम्** -	गङ्गायाः समीपम् -	गंगा के पास।
3 **प्रतिदिनम्** -	दिनं दिने प्रति -	प्रत्येक दिन ।
4. **आजीवनम्** -	जीवनस्य पर्यन्तम् -	जीवन भर।
5. **निर्दोषः** -	दोषाणाम् अभावः -	दोषों का अभाव।
6. **अनुरूपम्** -	रूपस्य योग्यम् -	रूप के योग्य ।
7. **निर्मक्षिकम्** -	मक्षिकाणाम् अभावः-	मक्खियों का अभाव ।
8. **उपकृष्णम्** -	कृष्णस्य समीपम् -	कृष्ण के पास।

2.तत्पुरुष समास

सूत्र-प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः ॥

परिभाषा-जब समस्त पद में उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता हो और पूर्व पद में द्वितीया से सप्तमी विभक्ति तक का लोप हो तो वहाँ 'तत्पुरुष समास होता है।

यथा-ग्रामगतः (ग्रामम् गतः) द्वितीय तत्पुरुष ।

इसमें लिग, विभक्ति तथा वचन का प्रयोग उत्तर अनुरूप किया गया है।

द्वितीया तत्पुरुष

जब सामासिक पद के पूर्व द्वितीया विभक्ति का लोप होता है, तो वहाँ द्वितीया तत्प समास होता है। इस समास में पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में होता है।

1. शरणागतः - शरणम् आगतः - शरण में आया हुआ।
2. गजारूढ़ः - गजम् आरूढ़ः - हाथी पर सवार।
3. दुःखातीतः - दुखम् अतीतः - दुःख पार किया हुआ।
4. प्रलयगतः - प्रलयं गतः - प्रलय को गया हुआ।

|

unacademy

तृतीया तत्पुरुष

जब सामासिक पद के पूर्व पद में तृतीया विभक्ति का लोप हो, तो वहाँ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

1. धनहीनः - धनेन हीनः - धन से हीन (गरीब)
2. नखभिन्नः - नखैः भिन्नः - नाखूनों से कटा हुआ।
3. - शरेण आहतः - बाण से घायल
4. विष्णुस्त्रातः - विष्णुना त्रातः - विष्णु से डरा हुआ

चतुर्थी तत्पुरुष

जब सामासिक पद के पूर्व पद में चतुर्थी विभक्ति का लोप होता है, तो वहाँ चतुर्थी तत्पुरुष समास होता है।

1. पुत्रहितम् - पुत्राय हितम् – पुत्र के हित के लिए
2. गोसूखम् - गवे सुखम् - गाय के लिए सुख
3. रक्षापुरुष - रक्षायै पुरुषः - रक्षा के लिए पुरुष
4. यूपदारुः - यूपाय दारु - खम्भे के लिए लकडी

unacademy

पञ्चमी तत्पुरुष-

जब सामासिक पद के पूर्व पद में पञ्चमी भक्ति का लोप होता है, तो वहाँ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है।

सर्पभीतः - सर्पात् भीतः - सांप से डरा हुआ

धर्मभ्रष्टः - धर्मात् भ्रष्टः - धर्म से गिरा हुआ

दरादागतः - दूरात् आगतः - दूर से आया हुआ

दुःख मुक्तः - दुःखात् मुक्तः - दुःख से मुक्त

वृक्षपतितः - वृक्षात् पतितः - वृक्ष से गिरा हुआ

षठी तत्पुरुष

जब सामासिक पद के पूर्व पद में षष्ठी विभक्ति का लोप होता है, तो वहाँ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

विद्यालयः	-	विद्यानाम् आलय	-	विद्याओं का घर।
गङ्गाजलम्	-	गङ्गायाः जलम्	-	गङ्गा का पानी।
स्वर्गफलम्	-	स्वर्गस्य फलम्	-	स्वर्ग का फल।
राजदण्ड	-	राज्ञः दण्डः	-	राजा का दण्ड।
प्रजापतिः	-	प्रजायाः पतिः	-	प्रजा का पति

सप्तमी तत्पुरुष

जब सामासिक पद के पूर्व पद में सप्तमी विभक्ति का लोप होता है, तो वहाँ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है।

विद्याकुशलः -	विद्यायां कुशलः -	विद्या में कुशल
जलमग्नः -	जले मग्नः -	जल में डूबा हुआ
शास्त्रनिपुणः -	शास्त्रेषु निपुणः -	शास्त्रों में निपुण
नरोत्तमः -	नरेषु उत्तमः -	मनुष्यों में श्रेष्ठ
कूपपतितः -	कूपे पतितः -	कुएं में गिरा हुआ

3. द्वन्द्व समास

सूत्र-उभयपद प्रधानो द्वन्द्वः ।

परिभाषा-जब समस्त पद में दोनों (अर्थात् पूर्व पद और उत्तर पद) पद प्रधान होते हैं, वहाँ द्वन्द्व समास होता है। विग्रह करने पर च प्राप्त होता है।

द्वन्द्व समास के तीन भेद होते हैं

(क) इतरेतर

(ख) समाहार

(ग) एक शेष

unacademy

क) इतरेतर द्वन्द्व-

जब सामासिक पद में प्रयुक्त पद अपनी-अपनी प्रधानता रखते हैं और दोनों पदों का अलग-अलग अर्थ होता है, वहाँ इतरेतर द्वन्द्व, समास होता है। इसमें यदि दो पद हों, तो अन्तिम पद द्विवचन का और यदि पद दो से अधिक हैं तो अन्तिम पद बहुवचन होता है।

स्त्रीपुरुष	- स्त्री च पुरुषः च	- स्त्री और पुरुष
रामकृष्णौ	- रामः च कृष्णः च	- राम और कृष्ण
गंगायमुने	- गंगा च यमुना च	- गंगा और यमुना
मातापितरौ	- माता च पिता च	- माता और पिता
हरिहरी	- हरिः च हरः च	- हरि और हर

(ख) समाहार द्वन्द्व-

जब सामासिक पद में अनेक पदों के होने से एक समुदाय का बोध होता है वहाँ समाहार द्वन्द्व होता है। इसमें पद सदैव नपुंसकलिग एकवचन में रहता है।

रथाश्वम्	-	रथश्च अश्वाश्च	-	रथ और घोड़े
हस्तपादम्	-	हस्तौ च पादौ च	-	हाथ और पैर
दधिघृतम्	-	दधि च घृतम् च	-	दही और घी
मुखनेत्रम्	-	मुखं च नेत्र च	-	मुख और आँख
अहर्निशम्	-	अहः च निशा च	-	दिन और रात

(ग) एकशेष द्वन्द्व-

समान पदों में समास होने पर एक

पद शेष रह जाता है, जो दोनों पदों का बोध करता। • है। इसमें समस्त पद सदैव द्विवचन में होता है।

पितरौ	-	माता च पिता च	-	माता और पिता
अजौ	-	अजा च अजश्च	-	बकरी और बकरा
भ्रातरौ	-	भ्राता च भगिनी च	-	भाई और बहिन
पुत्रौ	-	पुत्री च पुत्रः च	-	बेटी और बेटा
युवानी	-	युवती च युवा च	-	युवती और युवक

unacademy

4. द्विगु समास

जब समस्त पद का पूर्व पद संख्यावाचक हो त पद संज्ञा हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं। इस पद के करने पर समाहार (समूह) का बोध होता है। इसका स प्रायः नपुंसकलिग, एकवचन होता है।

पञ्चवटी	- पञ्चानाम् वटानां समाहार	- पाँच वटों का समूह
त्रिभुवनम्	- त्रयाणां भुवनानां समाहारः	- तीन भुवनों का समूह
चतुर्फलम्	- चतुर्णा फलाना समाहारः	- चारों फलों का समूह
पञ्चगवम्	- पञ्चानां गवानां समाहारः	- पांच गायों का समूह
पञ्चपात्रम्	- पञ्चानां पांत्राणां समाहारः	- पाँच पात्रों का समूह

unacademy

5. कर्मधारय समास

सूत्र-'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्

परिभाषा-जब समस्त पद में पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है, तो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। विग्रह करते समय विशेष्य के लिग, विभक्ति और वचन के अनुसार ही विशेषण में लिग, विभक्ति और वचन होते हैं।

यथा-कृष्णः सर्पः। इसमें कृष्ण (काला) सर्प की विशेषता बताता है। दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति है।

unacademy

नीलोत्पलम्	नील च तत् उत्पलम्	नीला जो कमल
महादेवः	महान् चासो देवः	महान् देवता
पीताम्बरः	पीतं च तत् अम्बर	पीला जो वस्त्र
महाराजः	महान् चासो राज्ञः	महान् राजा
पीतकृष्णः	पीतः च कृष्णः च	पीता और काला
नीलपीतम्	नीलं च पीतं च	नीला और पीला
कृष्णश्वेतः	कृष्णः च श्वेत च	काला और सफेद
शीतोष्णम्	शीतं च उष्णं च	ठण्डा और गर्म
नरसिह	नर इव सिहः	नर सिह की तरह
घनश्यामः	घन इव श्यामः	बादलों के समान श्याम

6. बहुव्रीहि समास

सूत्र-'अनेकमन्य पदार्थ

परिभाषा-जब सामासिक पद में सभी पद मिलकर किसी दूसरे शब्द की विशेषता बताते हैं, तो वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। विग्रह करते समय यत् के रूपो (यस्य, येन, यस्मै) का प्रयोग किया जाता है।

unacademy

दशाननः - दशानि आननानि -दस हैं मुख जिसके यस्य सः (रावण)

नीलकण्ठः - नीलः कण्ठः यस्य - नीला है कण्ठ जिसका (शिव)

पीताम्बरः - पीतम् अम्बर यस्य - पीला है वस्त्र सः जिसका (श्रीकृष्ण)

लम्बोदरः - लम्बम् उदरं यस्य - लम्बा है उदर सः जिसका (गणेश)

चक्रपाणिः - चक्र पाणौ यस्य - चक्र है हाथ में जिसके (विष्णु)

चन्द्रशेखरः - चन्द्रः शेखरे यस्य - चन्द्र है शिखर पर जिसके (शिव)

वीणापाणिः - वीणा पाणौ यस्य - वीणा है पाणि में सः जिसके (सरस्वती)

सुपुत्रः - पुत्रेण सहित - पुत्र सहित (पिता)

ससीतः - सीतया सह - सीता के साथ (राम)

केशाकेशि - कैशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृतं युद्ध - बालों को पकड़ कर हुआ युद्ध